TDC-1st (subsidiary)

सामाजिक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and definitions of social group)

classmate
Date
Page

मनुष्य का जीवन सामूहिक जीवन है। वह सदा समूह मे रहता है और अपने सहयोगियों साथ सदा नये समूह का निर्माण करता रहता है। समूह के बिना मानव का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। वह जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त विभिन्न प्रकार के समूहों में ही रहता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति एक परिवार रूपी समूह में जन्मा है। हमारे अधिकांश कार्य किसी-न किसी समूह (पड़ोस, मुहल्ला, गाँव, स्कूल, कालेज एवं नगर आदि) के सदस्य के रूप में सम्पन्न होते हैं। हमारी सारी समस्याएं समूह से जुड़ी है।

सामान्यतः व्यक्तियों के एकत्रित रूप को समूह कह दिया जाता है। लेकिन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ऐसा कहना गलत है। सामाजिक समूह ऐसे व्यक्तियों का समूह है अर्थात संगठन है जो हितों की पूर्ती के लिए दूसरे से संबंधित हो। इस रूप में सामाजिक समूह के लिए तीन तत्वों का होना अनिवार्य है — (1) एक से अधिक व्यक्तियों का होना, (2) एक खास हित या उद्देश्य या स्वार्थ का होना, तथा (3) सामाजिक संबंध का होना।

सामाजिक समूह की परिभाषाओं को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न - भिन्न तरह से व्यक्त किए है जो निम्नलिखित है:—

मैकाइवर एवं पेज:—

"समूह से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों के किसी भी ऐसे संग्रह से है जो एक दूसरे के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करते है।"

इनकी परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि (1) समूह के लिए एक से अधिक व्यक्तियों का होना जरूरी है

और (ii) इन व्यक्तियों से सामाजिक संबंध का होना आवश्यक है।

जॉनसन :— "हमारे अर्थों में, किसी भी समूह में उनके सदस्यों के बीच कुछ लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आंशिक सहयोग निहित रहता है।"

इनकी परिभाषा से दो बातें स्पष्ट होती है — (i) लक्ष्य का होना और (ii) इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सहयोग का होना। जॉनसन का मानना है कि बिना सहयोग के समूह की कल्पना नहीं की जा सकती।

ऑगबर्न एवं निमकॉफ :— "जब कभी दो या दो से अधिक व्यक्ति एक दूसरे के सम्पर्क में आते है और एक दूसरे को प्रभावित करते है, तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते है।"

इनकी परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक समूह के लिए तीन तथ्यों का होना जरूरी है! —
(i) दो या दो से अधिक व्यक्ति का होना, (ii) इन व्यक्तियों का एक दूसरे के सम्पर्क में आना और (iii) एक दूसरे को प्रभावित करना।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि जब दो या उससे अधिक व्यक्ति सामान्य हितों के लिए सामाजिक संबंध बनाते है और एक-दूसरे को प्रभावित करते है तो वे सामाजिक समूह कहे जाते है। उदाहरणस्वरूप परिवार, पड़ोस, स्कूल, कॉलेज एवं व्यावसायिक संघ आदि।